सबसे कीमति

राजा महेन्द्रनाथ हर वर्ष अपने राज्य में एक प्रतियोगिता का आयोजन करते थे, जिसमें हज़ारों की संख्या में प्रतियोगी भाग लिया करते थे और विजेता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाता था। एक दिन राजा ने प्रजा की सेवा को बढ़ाने हेतु एक राजपुरुष की नियुक्ति के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित करने का फैसला किया। दूर-दूर से इस बार लाखों की तादात में प्रतियोगी आये हुए थे।

राजा ने इस प्रतियोगिता के लिए एक बड़ा-सा उद्यान बनवाया था, जिसमें राज-दरबार की सभी कीमती वस्तुएं थीं, हर प्रकार की सामग्री उपस्थित थी, लेकिन किसी भी वस्तु के समाने उसका मूल्य निश्चित नहीं किया गया था।

राजा ने प्रतियोगिता आरंभ करने से पहले एक घोषणा की, जिसके अनुसार जो भी व्यक्ति इस उद्यान में सबसे कीमती वस्तु लेकर राजा के सामने उपस्थित होगा उसे ही राजपुरुष के लिए स्वीकार किया जाएगा। प्रतियोगिता आरंभ हुई। सभी उद्यान में सबसे अमूल्य वस्तु तलाशने में लग गए, कई हीरे-जवाहरात लाते, कई सोने-चांदी, कई लोग पुस्तकें, तो कोई भगवान की मूर्ति, और जो बहुत गरीब थे, वे रोटी, क्योंकि उनके लिए वही सबसे अमूल्य वस्तु थी। सब अपनी क्षमता के अनुसार मूल्य को सबसे ऊपर आंकते हुए राजा के समाने उसे प्रस्तुत करने में लगे हुए थे। तभी एक नौजवान राजा के सामने खाली हाथ उपस्थित हुआ।

राजा ने सबसे प्रश्न करने के उपरांत उस नौजवान से प्रश्न किया- 'अरे! नौजवान, क्या तुम्हें उस उद्यान में कोई भी वस्तु अमूल्य नज़र नहीं आई? तुम खाली हाथ कैसे आये हो?'

'राजन! मैं खाली हाथ कहाँ आया हूँ, मैं तो सबसे अमूल्य धन उस उद्यान से लाया हूँ।' - नौजवान बोला।

'तुम क्या लाये हो?' - राजा ने पूछा।

'मैं संतोष लेकर आया हूँ महाराज!' - नौजवान ने कहा।

'क्या, 'संतोष', इनके द्वारा लाये गए इन अमूल्य वस्तुओं से भी मूल्यवान है?' - राजा ने पुन: प्रश्न किया।

'जी हाँ राजन! इस उद्यान में अनेकों अमूल्य वस्तुएं हैं, पर वे सभी इंसान को क्षण भर के लिए सुख की अनुभूति प्रदान कर सकती है। इन वस्तुओं को प्राप्त कर लेने के बाद मनुष्य कुछ और ज़्यादा पाने की इच्छा मन में उत्पन्न कर लेता है, अर्थात् इन सबको हासिल करने के बाद इंसान को खुशी तो होगी, लेकिन वह क्षण भर के लिए ही होगी। लेकिन जिसके पास संतोष का धन है, संतोष के हीरे-जवाहरात हैं, वही इंसान अपनी असल ज़िन्दगी में सच्चे सुख की अनुभूति और अपने सभी भौतिक इच्छाओं पर नियंत्रण कर सकेगा।' - नौजवान ने शांत स्वर में उत्तर देते हुए कहा।

राजा उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उस नौजवान को लाखों लोगों में चुनते हुए उसे राजपुरुष पद के लिए सम्मानित किया गया।

वो उसी का है

टोकियो के निकट एक महान जैन मास्टर रहते थे, वो अब वृद्ध हो चुके थे और अपने आश्रम में जैन बुद्धिज़्म की शिक्षा देते थे। एक नौजवान योद्धा, जिसने कभी कोई युद्ध नहीं हारा था, ने सोचा कि अगर मैं मास्टर को लड़ने के लिए उकसा कर उन्हें लड़ाई में हरा दूं तो मेरी ख्याति और भी फैल जायेगी और इसी विचार के साथ वो एक दिन आश्रम पहुंचा।

'कहाँ है वो मास्टर? हिम्मत है तो सामने आये और मेरा सामना करे...' योद्धा की क्रोध भरी आवाज़ पूरे आश्रम में गूंजने लगी। देखते-देखते सभी शिष्य वहां इकठ्ठे हो गए और अंत में मास्टर भी वहीं पहुँच गए। उन्हें देखते ही योद्धा उन्हें अपमानित करने लगा, उसने जितनी हो सकी उतनी गालियाँ और अपशब्द मास्टर को कहे, पर मास्टर फिर भी चुप रहे और शांति से वहां खड़े रहे। बहुत देर तक अपमानित करने के बाद भी जब मास्टर कुछ नहीं बोले तो योद्धा कुछ घबराने लगा, उसने सोचा ही नहीं था कि इतना सब कुछ सुनने के बाद भी मास्टर उसे कुछ नहीं कहेंगे...। उसने अपशब्द कहना जारी रखा और मास्टर के पूर्वजों तक को भला-बुरा कहने लगा... पर मास्टर तो मानो बहरे हो चुके थे, वो उसी शांति के साथ वहां खड़े रहे और अंतत: योद्धा थक कर खुद ही वहां से चला गया।

उसके जाने के बाद वहां खड़े शिष्य मास्टर से नाराज़ हो गए। 'भला आप इतने कायर कैसे हो सकते हैं, आपने उस दुष्ट को दण्डित क्यों नहीं किया? अगर आप लड़ने से डरते थे, तो हमें आदेश दिया होता, हम उसे छोड़ते नहीं।' शिष्यों ने एक स्वर में कहा। मास्टर ने मुस्कुराते हुए पूछा- 'यदि तुम्हारे पास कोई कुछ सामान लेकर आता है और तुम उसे नहीं लेते हो तो उस सामान का क्या होता है?' 'वो उसी के पास रह जाता है, जो उसे लाया था।' - किसी शिष्य ने उत्तर दिया। तब मास्टर बोले - 'यही बात इर्ष्या, क्रोध और अपमान के लिए भी लागू होती है। जब इन्हें स्वीकार नहीं किया जाता तो वे उसी के पास रह जाती हैं जो उन्हें लेकर आया था।'

आज ही...

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरू का बहुत आदर-सम्मान किया करता था। गुरू भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे, लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने का पूरा सामर्थ्य होता है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरू जी ने कहा - 'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए देकर, कहीं दूसरे गांव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात् मैं इसे तुमसे वापस ले लूंगा।' शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ, लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा। इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रात: काल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान ले आऊंगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात् ही सामान लेने निकलूंगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी-जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए। उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा। लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी बनने का सपना चूर-चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा। वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बनकर दिखायेगा।

इंदौर-शीतल नगर। नवनिर्मित 'ज्ञान प्रकाश भवन' का उद्घाटन करते हुए विधायक सुदर्शन गुप्ता, विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष शंकर लालवानी, पार्षद संतोष गौर, मुख्य क्षेत्रिय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. चंद्रकला, ब्र.कु. छाया तथा अन्य।

उज्जैन-म.प्र.। विश्व महिला दिवस पर 'सशक्त नारी सुरक्षित समाज' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भिलाई से आईं ब्र.कु. प्राची। साथ हैं होम्योपैथी विशेषज्ञा डॉ. पूजा बागडी, ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. मंजू।

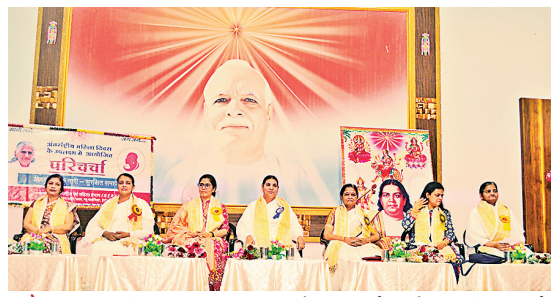

इंदौर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन ए.आई.जी. सोनाली दुबे, पूर्व महापौर डॉ. उमाशशी शर्मा, वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञा डॉ. पूनम माथुर, मूक बधीर संस्थान आनंद सर्विस सोसायटी की डायरेक्टर मोनिका पुरोहित, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. प्राची तथा ब्र.कु. सुमित्रा।

ग्वालियर-सिटी सेंटर(म.प्र.)। महिला दिवस पर श्री गोपाल मंदिर गोविंद आश्रम ट्रस्ट तथा ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'आध्यात्मिक शक्ति से ही नारी सशक्तिकरण संभव' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. रानी, डॉ. ज्योत्सना, एडवोकेट अनामिका, डॉ. वंदना, मंदिर के अध्यक्ष अजय शर्मा तथा अन्य अतिथिगण।

चिलोडा-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में महिला पुलिस कर्मियों को सम्बोधित करते हुए वुमेन विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. शारदा। साथ हैं ब्र.कु. कैलाश बहन तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आई.पी.एस. ग्रुप ऑफ कॉलेज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आदर्श बहन।